Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.249
Peer Reviewed Journal
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2410III01V12P0003

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue On CPDE Oct'2024
Issue–III(III), Volume–XII

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

***नीतू द्विवेदी,**
शोधार्थी, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, बालाघाट

****डॉ मुकुन्द लाल पाण्डेय,**
शोध निर्देशक, सरदार पटेल स्कूल ऑफ एजुकेशन सरदार पटेल विश्वविद्यालय, बालाघाट (मध्यप्रदेश)

सारांश

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए कुछ उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं वे इस प्रकार हैं, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलनात्मक अध्ययन करना। इसके आधार पर निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्तांकों के माध्यों में कोई अंतर नहीं पाया जायेगा। इसके लिए हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के 12 विद्यालय को लिया गया है। बालाघाट जिले के बारह विद्यालयों में अध्ययनरत् दसवीं के 144 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। प्रत्येक विद्यालय में 12 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। कुल 12 विद्यालयों में 72 छात्र एवं 72 छात्राओं का चयन किया गया है। जिसमें से 72 छात्र–छात्राएं ग्रामीण स्कूलों से तथा 72 छात्र–छात्राएं शहरी स्कूलों से लिया गया है। इनसे प्राप्त परिणाम समय का पूर्णतः प्रतिनिधित्व करेंगे। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु आंकड़ों को एकत्र करने के लिए स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है। सार्थक अंतर के लिए – क्रांतिक अनुपात (Critical Ratio) का प्रयोग किया गया है। इसके आधार पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए परिकल्पना क्रमांक 1 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परिकल्पना की पुष्टि हुई। परिकल्पना क्रमांक 2 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परिकल्पना की पुष्टि हुई। परिकल्पना क्रमांक 3 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परिकल्पना की पुष्टि हुई।

भूमिका

''सर्वोच्च शिक्षा वही है जो संपूर्ण दृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।''

– रविन्द्रनाथ टैगोर

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की वह धुरी है जिस पर उसके विकास का चक्र घूमता है राष्ट्रजनों के मानसिक क्षितिज को विस्तार देकर उन्हें प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने में सक्षम बनाना शिक्षा का उपहार है।

शिक्षा मानव विकास की पूर्ण अभिव्यक्ति हैं। शिक्षा एक ऐसी सामाजिक तथा गतिशिल प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के जन्मजात गुणों का विकास करके उसके व्यक्तित्व को निखारती है। शिक्षा के द्वारा मानव का मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक व आर्थिक विकास होता है। उनंत काल से मनुष्य कुछ न कुछ सीखता आया है और इसी परिवर्तन के फलस्वरूप आज मानव सभ्यता के उंचे शिखर पर चढ़ने में समर्थ हुआ है। शिक्षा

जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, भाषा शिक्षा को समझने का माध्यम है। भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का सबसे प्रमुख सशक्त माध्यम है।

प्राचीन समय में विभिन्न देशों में समाज के आदर्शों और उद्देश्यों के अनुसार शिक्षा को विभिन्न अर्थ दिए गए थे।

शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। हयी प्रक्रिया उसे समाज में एक व्यस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। शिक्षा का अर्थ है सीखना और सीखना।

हर्बट स्पैनसर के अनुसार :–

शिक्षा का अर्थ अन्तःशक्तियों का बाह्य जीवन से समन्वय स्थापित करना है।

पेस्तालॉजी के अनुसार :–

शिक्षा मानव की सम्पूर्ण शक्तियों का प्राकृतिक, प्रगतिशील और सामंजस्यपूर्ण विकास है।

शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ

शिक्षण संस्थानों के अन्तर्गत शिक्षकों द्वज्ञरा जो शिक्षण प्रक्रिया संचालित की जाती है, एवं जिसके द्वारा बालक में ज्ञानार्जन अर्जित करते है वह उनकी शैक्षिक उपलब्धि कही जा सकती है।

शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है। शिक्षा प्रक्रिया के द्वारा छात्रों के व्यवहार में पूर्व निर्धारित संशोधन करने का प्रयास किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि शैक्षिक अनुभवों के परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों में होने वाले परिवर्तन को ही शैक्षिक उपलब्धि कहा जाता है।

बच्चों ने शिक्षा के क्षेत्र में कितनी उन्नति की है, इसका ज्ञान बच्चों की एक पैमाना या मानक है, बच्चे की शैक्षिक उन्नति को मापने का साधारणतः शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय एक निश्चित समवावधि में विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषय विशेष या विभिन्न विषयों में प्राप्त प्राप्तांकों से लिया जाता है। यदि कोई विद्यार्थी विभिन्न विषयों में अच्छे अंक प्राप्त करतता है तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि को उच्च श्रेणी में वर्गीकृत किया जाता है।

अध्ययन का शैक्षिक महत्व

शिक्षा को राष्ट्र के विकास की कुंजी कहा जाता है। राष्ट्र की शिक्षा विकास के लिए आवश्यक आधार प्रदान करती है। यह व्यक्ति को उच्च सामाजिक एवं व्यावसायिक गुण प्रदान करके उसे सुयोगय नागरिक बनाती है। अतः भारत जैसे विकासशील देश शिक्षा की अवहेलना कदापि नहीं कर सकता है। यहां शिक्षा का स्तर सुधारने के प्रयास भी होते रहे हैं।

आज के बालक अपनी शिक्षा को लेकर चिंतित रहते हैं हर समय उनके मन में दूसरों से अच्छा करने की जिज्ञासा होती है बालक अपनी शैक्षिक उपलब्धि को पाने के लिए हर तरह से प्रयास करते हैं।

अतः प्रस्तुत लघुशोध में शोधकर्ता ने ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि जानने का प्रयास किया है।

संबंधित शोध अध्ययन

वांग, ए०वाइ० (2007) ने अपने अध्ययन में रचनात्मक का शिक्षण आस्था, अधिगम अनुभवों और उपलब्धि के साथ सहसम्बन्ध जानने की चेष्टा की। उन्होंने यह अध्ययन संयुक्त राज्य अमेरिका और ताइवान के छात्राध्यापकों पर किया। प्राप्त परिणामों से यह पता चला है कि रचनात्मक प्रदर्शन का शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक सहसम्बन्ध है।

सिंह, वाई0जी0 (2011) ने हाई स्कूलों के छात्रों की शैक्षिक आंकाक्षा तथा उनको प्रभावित करने वाले दो चरों (लिंग था अधिगम माध्यम) पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में अकोला जिले के विभिन्न स्कूलों की नौंवी कक्षा के 500 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में शामिल कर सर्वेक्षण किया। इस अध्ययन में डॉ० एस०के० सक्सेना (1984) द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर छात्राओं से अधिक थी तथा अंग्रेजी माध्यम छात्रों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर छात्राओं से कम पाया गया।

समस्या का कथन

''ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन''

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत लधुशोध के अध्ययन में निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं :–

1. ग्रामीण क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

अतः परिकल्पना को वैज्ञानिक रूप से निरीक्षित करने हेतु निम्न लिखित परिकल्पना का निर्माण किया गया :–

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्तांकों के माध्यों में कोई अंतर नहीं पाया जायेगा।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्तांकों के माध्यों में कोई अंतर नहीं पाया जायेगा।
3. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्तांकों के माध्यों में कोई अंतर नहीं पाया जायेगा।

अध्ययन की परिसीमा

1. यह अध्ययन बालाघाट जिले के विद्यार्थियों तक ही सीमित है।
2. इस अध्ययन हेतु हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के 12 विद्यालय को लिया गया है।
3. यह अध्ययन कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों तक ही सीमित है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में यादृच्छिक न्यादर्श विधि का उपयोग किया गया है।

बालाघाट जिले के बारह विद्यालयों में अध्ययनरत् दसवीं के 144 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। प्रत्येक विद्यालय में 12 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। कुल 12 विद्यालयों में 72 छात्र एवं 72 छात्राओं का चयन किया गया है। जिसमें से 72 छात्र–छात्राएं ग्रामीण स्कूलों से तथा 72 छात्र–छात्राएं शहरी स्कूलों से लिया गया है। इनसे प्राप्त परिणाम समय का पूर्णतः प्रतिनिधित्व करेंगे।

चर

स्वतंत्र चर – ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी

आश्रित चर – शैक्षिक उपलब्धि

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु आंकड़ों को एकत्र करने के लिए स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है –

1. केंद्रीय प्रवृत्ति मापक – माध्य (Mean)
2. प्रदत्त मापक की गणना हेतु – मानक विचलन (Standard Deviation)
3. सार्थक अंतर के लिए – क्रांतिक अनुपात (Critical Ratio)

इस संपूर्ण प्रक्रिया में निम्नांकित सूत्रों का प्रयोग किया गया है :–

परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों का सारणीयन किया गया फिर विभिन्न सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया । गणना से प्राप्त मानों के आधार पर परिकल्पनाओं का विश्लेषण कर विवेचन किया गया कि परिकल्पनाओं की पुष्टि हो रही है अथवा नहीं।

परिकल्पना क्रमांक 1

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्तांकों के माध्यों में कोई अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 1

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्तांकों के माध्य, प्रमाप विचलन एवं CR मूल्य दर्शाने वाली सारणी

क्रं.	चर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	CR	सार्थक/सार्थक नहीं
1	ग्रामीण छात्र	36	69.47	13.46	0.98	सार्थक अंतर नहीं पाया गया
2	शहरी छात्र	36	72.33	11.16		

df = 70

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी के आधार पर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का माध्य क्रमशः 69.47 व 72.33 है तथा प्रमाप विचलन 13.46 व 11.16 है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्रों की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्रों का माध्य अधिक है अतः माध्यों में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए CR मूल्य की गणना की गई जिसका मूल्य 0.98 है। CR मूल्य सारणी के 70 df पर 0.01 स्तर पर 2.00 और 0.05 स्तर पर 2.66 है। गणना मूल्य सामणी मूल्य से कम है अतः उपरोक्त परिकल्पना में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना क्रमांक 1 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परिकल्पना की पुष्टि हुई।

आरेख क्रमांक 1

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्तांकों के माध्य, प्रमाप विचलन एवं CR मूल्य दर्शाने वाला आरेख

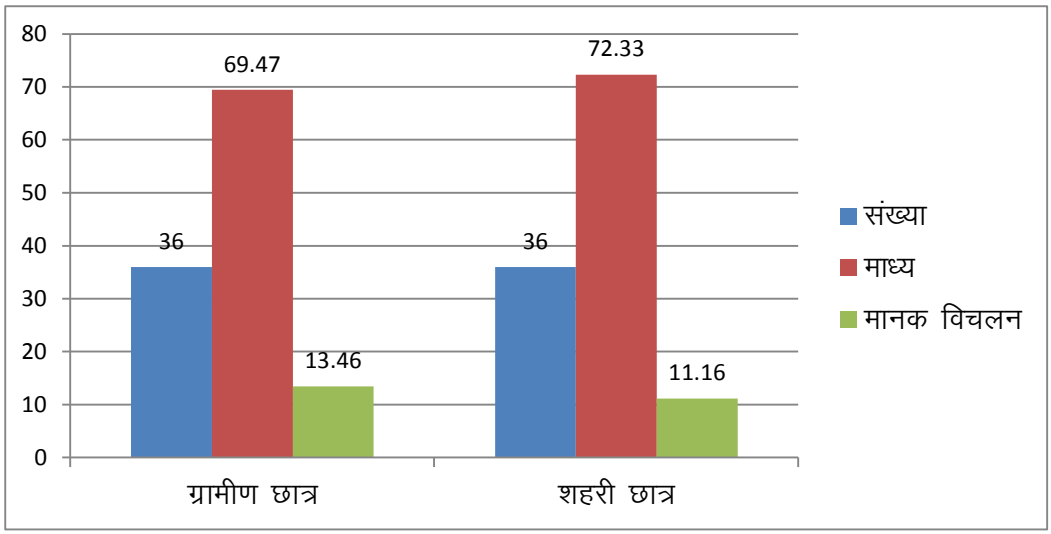

परिकल्पना क्रमांक 2

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्तांकों के माध्यों में कोई अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 2

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्तांकों के माध्य, प्रमाप विचलन एवं CR मूल्य दर्शाने वाली सारणी

क्रं.	चर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	CR	सार्थक/सार्थक नहीं
1	ग्रामीण छात्राएं	36	74.5	12.06	0.57	सार्थक अंतर नहीं पाया गया
2	शहरी छात्राएं	36	76	10.44		

df = 70

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी के आधार पर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का माध्य क्रमशः 74.5 व 76 है तथा प्रमाप विचलन 12.06 व 10.44 है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्राओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्राओं का माध्य अधिक है अतः माध्यों में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए CR मूल्य की गणना की गई जिसका मूल्य 0.57 है। CR मूल्य सारणी के 70 df पर 0.01 स्तर पर 2.00 और 0.05 स्तर पर 2. 66 है। गणना मूल्य सामणी मूल्य से कम है अतः उपरोक्त परिकल्पना में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना क्रमांक 2 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परिकल्पना की पुष्टि हुई।

आरेख क्रमांक 2

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्तांकों के माध्य, प्रमाप विचलन एवं CR मूल्य दर्शाने वाला आरेख

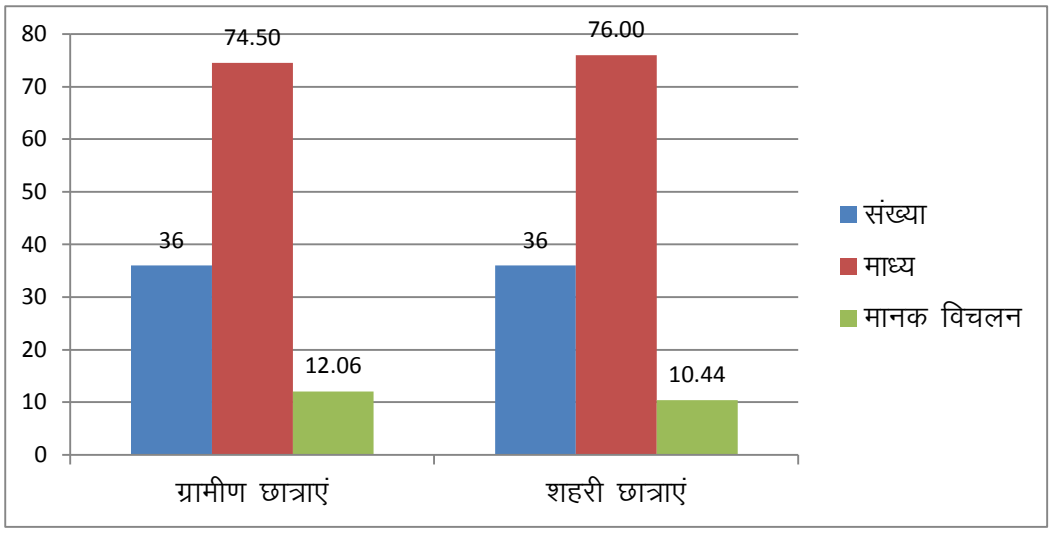

परिकल्पना क्रमांक 3

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्तांकों के माध्यों में कोई अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 3

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्तांकों के माध्य, प्रमाप विचलन एवं CR मूल्य दर्शाने वाली सारणी

क्रं.	चर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	CR	सार्थक/सार्थक नहीं
1	ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी	72	71.98	13.47	1.09	सार्थक अंतर नहीं पाया गया
2	शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी	72	74.19	10.75		

df = 142

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी के आधार पर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का माध्य क्रमशः 71.98 व 74.19 है तथा प्रमाप विचलन 13.47 व 10.75 है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के माध्य की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का माध्य अधिक है अतः माध्यों में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए CR मूल्य की गणना की गई जिसका मूल्य 1.09 है। CR मूल्य सारणी के 70 df पर 0.01 स्तर पर 2.00 और 0.05 स्तर पर 2.66 है। गणना मूल्य सामणी मूल्य से कम है अतः उपरोक्त परिकल्पना में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना क्रमांक 3 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परिकल्पना की पुष्टि हुई।

आरेख क्रमांक 3

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्तांकों के माध्य, प्रमाप विचलन एवं CR मूल्य दर्शाने वाला आरेख

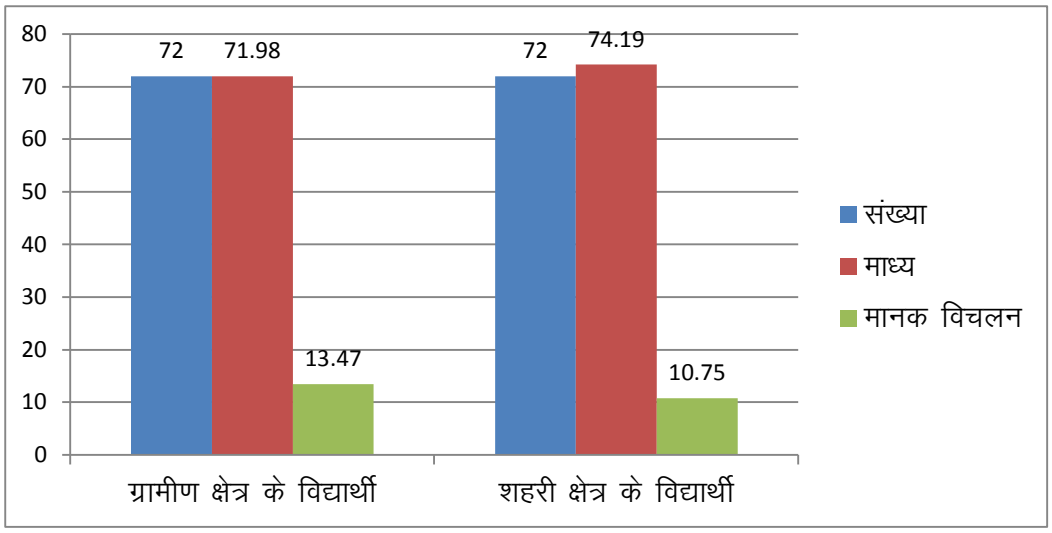

निष्कर्ष

किसी अनुसंधान की निष्कर्ष के बिना वह कार्य अपूर्ण माना जाता है। निष्कर्ष द्वारा अध्ययन की समस्या व संबंधित नवीन ज्ञान, सिद्धांत व नियमों की प्राप्ति होती है। उसके अतिरिक्त समस्या के समाधान एवं सुझाव देने में निष्कर्ष की सर्वाधिक उपयोगिता है। प्रस्तुत लघु शोध में समस्या के लिए उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं का निर्माण एवं निर्धारण किया गया परिकल्पनाओं के परीक्षण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुआ है :–

परिकल्पना क्रमांक 1 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्तांकों के माध्यों में कोई अंतर नहीं पाया जायेगा।

निष्कर्ष :– परिकल्पना क्रमांक 1 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परिकल्पना की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक 2 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्तांकों के माध्यों में कोई अंतर नहीं पाया जायेगा।

निष्कर्ष :– परिकल्पना क्रमांक 2 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परिकल्पना की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक 3 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्तांकों के माध्यों में कोई अंतर नहीं पाया जायेगा।

निष्कर्ष :– परिकल्पना क्रमांक 3 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के हाई स्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परिकल्पना की पुष्टि हुई।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता हे कि प्रस्तुत लधुशोध में समस्या कथन के आधार पर निर्मित परिकल्पनाओं में से सभी परिकल्पनां स्वीकृत हुई।

सुझाव

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कराने का प्रयास शिक्षकों द्वारा किया जाना चाहिए।
2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति की जानी चाहिए।
3. विद्यार्थियों में बौद्धिक क्षमता से संबंधित प्रायोगिक ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए।

4. बच्चें में लिंगभेद को ध्यान में न रखते हुए उन्हें उनके शैक्षिक उपलब्धि को और अच्छा करने हेतु प्रयास किया जाना चाहिए।
5. अभिभावकों को भी बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में सहायता करनी चाहिए।
6. विद्यालय एवं पारिवारिक वातावरण को अच्छा बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए।
7. बच्चों की रूचि पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. त्यागी, जी. एस. डी. (2014) ''शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार'', तृतीय संस्करण, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पृष्ठ संख्या–413
2. कुमार, अरविन्द (2015) ''हिन्दी व्याकरण और रचना'', द्वितीय संस्करण, लूसेंट पब्लिकेशनस, बिहार, पृष्ठ संख्या – 7
3. श्रीवास्तव, डी. एन. (2012) ''सांख्यिकी एवं मापन'', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पृष्ठ संख्या – 214–215
4. भार्गव, महेश (2007) ''आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन'', एच. पी. भार्गव कुब हाउस, आगरा
5. मंगल, एस. के. (2010) ''शिक्षा मनोविज्ञान'', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
6. सरीन व सरीन (2007) ''शैक्षिक अनुसंधान विधियां'', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
7. सक्सेना, एन. आर. स्वरूप (2010) ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत'', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
8. शर्मा, आर. ए. (2011) ''शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया'', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।